

उच्च शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी की भूमिका: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डा० मोहम्मद रफीक¹, तहसीन फात्मा²

¹सहायक आचार्य हलीम, मुस्लिम पी०जी० कालेज कानपुर, उत्तर प्रदेश

²शोध छात्रा हलीम मुस्लिम पी०जी० कालेज कानपुर।

Received: 15 May 2025 Accepted & Reviewed: 25 May 2025, Published: 31 May 2025

Abstract

उच्च शिक्षा डिजिटल परिवर्तन के युग में है। विश्वविद्यालयों, प्रशिक्षकों और छात्रों को तेजी से आनलाइन बदलाव करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। शिक्षा के वैश्वीकरण ने पहले ही डिजिटल तकनीकों के अनुप्रयोग को आवश्यक बना दिया है। शिक्षाशास्त्र का समर्थन करने के लिए साफ्टवेयर का उपयोग, भाषा, अनुवाद, उपकरण यू ट्यूब आदि के माध्यम से डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से उच्च शिक्षा के क्रांतिकारी परिवर्तन और सीखने की प्रक्रियाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है।

डिजिटल शिक्षा के लिए वर्तमान प्रथाओं और दिशाओं को एक ऐसे ढांचे के माध्यम से दर्शाता है जो रणनीतिक प्रक्रियाओं और संरचनात्मक परिवर्तन का समर्थन करता है। जिन्हें उच्च शिक्षा संस्थान डिजिटल शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के लिए लागू कर सकते हैं। इसका उद्देश्य सभी के लिए समावेशी समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है। डिजिटल प्रौद्योगिकी ने उच्च शिक्षा में एक आदर्श बदलाव किया है। डिजिटल उपकरणों के साथ कम्प्यूटर और अन्य उपकरणों का उपयोग करने से छात्रों को अधिक सक्रिय भूमिका निभाने और प्रक्रिया को केन्द्र में रहने की अनुमति मिलती है।

मुख्य शब्द: उच्च शिक्षा, डिजिटल प्रौद्योगिकी, एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण।

Introduction

सतत विकास में सामाजिक कल्याण शामिल है जो शिक्षा पर निर्भर करता है। सूचना प्रौद्योगिकी साझा ज्ञान फैलाने के लिए उभरी है और शिक्षा सुधारों के पीछे एक प्राथमिक प्रेरक शक्ति है। मोबाईल डिवाइस, स्मार्ट बोर्ड, टैबलेट, लैपटॉप सिमुलेशन डायनेमिक विजुअलाइजेशन और वर्चुअल प्रयोगशालाओं जैसे नये प्रौद्योगिकी सहायता प्राप्त शिक्षण उपकरणों की शुरुआत ने स्कूलों और संस्थानों में शिक्षा को बदल दिया है। युवा दिमागों को शिक्षित करने के सबसे अधिक लागत प्रभावी तरीकों में से एक साबित हुआ है। यह सभी के लिए विश्व स्तरीय सीखने के अनुभव को एकीकृत करने का एक मजबूत तंत्र भी है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी व्यवसाय लगातार उन व्यक्तियों के लिए शिक्षा तक पहुंच का विस्तार करने के लिए उपन्यास समाधान बनाने का प्रयास कर रहे हैं। जो पर्याप्त शैक्षिक सुविधायें प्राप्त नहीं कर सकते हैं। एक शिक्षण उपकरण के रूप में सोशल मीडिया ने एक लम्बा सफर तय किया है। कहीं भी, किसी भी समय जानकारी का संचार करने की क्षमता के अलावा, सोशल मीडिया साइटें सामाजिक गतिविधियों और संभवतः नई नौकरियों की स्थापना के लिए नेटवर्किंग संभावनाओं का उत्पादन करने का एक शानदार स्रोत भी है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास 2030 एजेंडे के मूलभूत घटकों में से एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है। इसका उद्देश्य सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए डिजिटल तकनीक एक आवश्यक उपकरण के रूप में उभरी है। ये तकनीकें

उत्सर्जन स्रोतों का पता लगाने, बेहतर उर्जा दक्षता और जीवाश्म ईंधन के लिए कम कार्बन विकल्पों के माध्यम से अतिरिक्त नुकसान को रोकने और यहां तक की पर्यावरण से अधिशेष ग्रीन हाउस गैसों को हटाने में सरल है। डिजिटल तकनीकों उत्पादन और दक्षता को बढ़ाते हुए प्रदूषण और कचरे को कम करने या खत्म करने का प्रयास करती हैं। इन तकनीकों ने शिक्षा प्रणाली पर एक शक्तिशाली प्रभाव दिखाया है। इन डिजिटल तकनीकों ने पूरी शिक्षा प्रणाली में एक आदर्श बदलाव किया है यह न केवल ज्ञान प्रदाता है बल्कि सूचना का सह निर्माता एक संरक्षक और एक मूल्यांकनकर्ता भी है। शिक्षा में तकनीकी सुधारों ने छात्रों के लिए जीवन को आसान बना दिया है। कलम और कागज का उपयोग करने के बजाय आजकल छात्र प्रस्तुतियां और प्रोजेक्ट बनाने के लिए विभिन्न साफ्टवेय और टूल का उपयोग करते हैं नोटबुक की ढेर की तुलना में एक आईपैड अपेक्षाकृत हल्का होता है। एक भारी किताब के विपरीत एक ई बुक सफ करना आसान है। ये विधियां शोध में रुचि बढ़ाने में सहायक हैं।

यह शोध पत्र शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी की आवश्यकता के बारे में संक्षिप्त है और शिक्षा में प्रमुख अनुप्रयोगों और चुनौतियों चर्चा करते हैं। दुनिया भर के शैक्षणिक संस्थानों को शिक्षण और सीखने की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) को तेजी से अपनाना और अपनाना पड़ा। भारत के संदर्भ में उच्च शिक्षा में आईसीटी द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। एक विस्तृत परीक्षण के माध्यम से अध्ययन का उद्देश्य इस अप्रत्याशित डिजिटल परिवर्तन की विशेषता वाले गहन प्रभाव बहुमुखी चुनौतियों और उभरते अवसरों का व्यापक आकलन करना है। उद्देश्य हमारा प्राथमिक शोध आईसीटी अपनाने के प्रभाव का मूल्यांकन करना है। इसमें इस बात की जांच शामिल है उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षण और सीखने को किस हद तक प्रभावित किया। इस उद्देश्य के लिए हम शैक्षणिक तरीकों में बदलाव पाठ्यक्रम वितरण में संशोधन और छात्र सहभागिता और शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच में बदलाव का पता लगाते हैं। हालाँकि आईसीटी को अपनाने से निस्संदेह परिवर्तनकारी परिवर्तन आए लेकिन यह चुनौतियों से रहित भी नहीं था।

डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ उन क्षमताओं को विकसित करने में सहायता करती हैं जिनके लिए छात्रों के पेशेवर प्रदर्शन की आवश्यकता होगी, जैसे समस्या-समाधान, सोच संरचना निर्माण और प्रक्रिया समझ। शैक्षिक संसाधन और डिजिटल उपकरण कक्षा के माहौल को बेहतर बनाने और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक आकर्षक बनाने में मदद करते हैं। उच्च शिक्षा में आईसीटी की भूमिका के बारे में गहन जानकारी प्रदान करने सामने आने वाली चुनौतियों उभरने वाली प्रभावी प्रथाओं और शैक्षिक परिदृश्य में स्थायी परिवर्तन की संभावना को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। इस अध्ययन के निष्कर्षों से क्षेत्र और उसके बाहर भविष्य की शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को सूचित और निर्देशित करने की उम्मीद है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) को तेजी से अपनाने के लिए मजबूर किया।

अध्ययन के उद्देश्य:-

- 1: – शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता का अध्ययन करना;
- 2: – शिक्षा में डिजिटल कक्षा के महत्व के बारे में जानकारी देना और शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों की भूमिका की पहचान करना;
- 3: – शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की महत्वपूर्ण चुनौतियों की पहचान करना।

1. डिजिटल प्राद्योगिकी शक्तिशाली साधन के रूप में:— डिजिटल तकनीक एक शक्तिशाली साधन है जो विभिन्न तरीकों से शिक्षा को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है, जैसे कि प्रशिक्षकों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करना और लोगों को सीखने और सहयोग करने के लिए नए तरीके प्रदान करना। इंटरनेट की दुनिया भर में पहुँच और इससे जुड़े कई बुद्धिमान उपकरणों के साथ एक नया युग आ गया है। इस प्रकार, शिक्षा में क्रांति लाने के लिए उन्नत डिजिटल तकनीक की क्षमता का उपयोग करना अनुदेशात्मक डिजाइनों और शिक्षाविदों पर निर्भर करेगा ताकि प्रभावी और कुशल शिक्षा सभी को और हर जगह उपलब्ध हो कक्षा के बाहर बच्चों को शिक्षा देने में तकनीक ने एक आवश्यक भूमिका निभाना जारी रखा है। डिजिटल शिक्षा रचनात्मकता को बढ़ावा देती है और छात्रों को सफलता की भावना देती है, पारंपरिक तकनीकों से हटकर सोचने के द्वारा अतिरिक्त सीखने को प्रोत्साहित करती है।

2:— आईसीटी अपनाने का प्रभाव — आईसीटी अपनाने के प्रभाव का आकलन करने के लिए, आईसीटी एकीकरण के कारण शिक्षण और सीखने में बदलाव के संबंध में उत्तरदाताओं की धारणाओं और अनुभवों की जांच की गई। सर्वे में पाया गया है कि सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी के उपकरणों से उच्च शिक्षा में अध्ययन/ अध्यापन का कार्य बेहद आसान हो गया है। विद्यार्थियों के अनुसार आईसीटी के उपकरणों के उपयोग से अध्ययन कार्य बहुत ही आसान हो गया है, आईसीटी के उपकरणों के प्रयोग से अध्ययन में थोड़ी आसानी हुयी है। वहीं आईसीटी के उपकरणों के उपयोग में आने वाली चुनौतियों पर पूछे गए सवाल के सवाल में सामने आया है कि विद्यार्थियों के पास आईसीटी के उपकरणों के प्रयोग के लिए संसाधनों का अभाव था। वहीं विद्यार्थियों को तकनीकी ज्ञान न होने के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ा। वहीं जब यह जाना गया कि शैक्षणिक स्तर को उच्च बनाए रखने में आईसीटी कितना सहायक सिद्ध हुई विद्यार्थियों के अनुसार आईसीटी का उपयोग काफी सहायक सिद्ध हुआ,

3:—डिजिटल प्रौद्योगिकी का गहरा प्रभाव — डिजिटल प्रौद्योगिकी को तेजी से अपनाने से उच्च शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ा। शोध ने संकेत दिया कि अधिक गतिशील और छात्र-केंद्रित शिक्षा की ओर बदलाव के साथ शैक्षणिक तरीकों में बदलाव महत्वपूर्ण थे। नए शिक्षण दृष्टिकोणों को अपनाने में शिक्षकों की अनुकूलनशीलता सराहनीय थी। हालाँकि, निष्कर्षों ने डिजिटल विभाजन को संबोधित करने की तत्काल आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी छात्रों को प्रौद्योगिकी और डिजिटल संसाधनों तक समान पहुंच प्राप्त हो। पाठ्यक्रम वितरण और छात्र जुड़ाव, हालांकि रूपांतरित हो गए, मिश्रित अनुभवों के साथ मिले। इंटरैक्टिव तत्वों का सफल एकीकरण एक सकारात्मक विकास था, लेकिन छात्र प्रेरणा और फोकस के संबंध में चुनौतियाँ बनी रहीं। भविष्य की रणनीतियों में शिक्षा की समग्र गुणवत्ता बढ़ाने के लिए पारंपरिक और डिजिटल तरीकों के संयोजन के लिए एक सूक्ष्म दृष्टिकोण शामिल होना चाहिए। शोध के निष्कर्षों ने महामारी के दौरान उभरी कई चुनौतियों और बाधाओं पर प्रकाश डाला। डिजिटल विभाजन, एक गंभीर मुद्दा, प्रौद्योगिकी और सीखने के संसाधनों तक पहुंच में असमानताओं को बढ़ाता हुआ पाया गया।

4. शिक्षा में तकनीकी की भूमिका:— शैक्षिक तकनीक ने शिक्षण प्रक्रिया में नवाचार लाकर शिक्षण की गुणवत्ता, छात्रों की शैक्षणिक प्रदर्शन और सीखने की रुचि में सुधार किया है। आईसीटी उपकरण, डिजिटल लर्निंग, और ई-लर्निंग जैसे प्रौद्योगिकियों का उपयोग शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, सुलभ और इंटरैक्टिव

बनाता है। डिजिटल शिक्षा में प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के साथ साथ तकनीकी दक्षता और इंटरनेट जैसी नवीनतम तकनीकों का उपयोग करना सिखाती है। इससे विद्यार्थी समय और स्थान की मुख्य बाधाओं को दूर करके अधिक समय शिक्षा और अध्ययन में लगा सकते हैं। डिजिटल शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग शिक्षकों को शिक्षण प्रक्रिया को सुगम बनाने और विद्यार्थियों के लिए समझदार और रोचक बनाने में मदद करता है। विद्यार्थियों को अन्य विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ ऑनलाइन सहयोग और विचार-विमर्श करने का मौका मिलता है। डिजिटल शिक्षा में विद्यार्थी अपने आप के साथ अधिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता से अपने अध्ययन का प्रबंध कर सकते हैं। डिजिटल शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग सीधे और अनुपलब्ध विषयों में शिक्षा प्रदान कर

5. शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की चुनौतियाँ:- शैक्षिक तकनीक अपनी कठिनाइयों के बिना नहीं है, विशेष रूप से कार्यान्वयन और उपयोग में। अत्यधिक स्क्रीन समय, प्रशिक्षकों द्वारा तकनीक के उपयोग की प्रभावकारिता और प्रौद्योगिकी निष्पक्षता के बारे में चिंताओं के मुद्दे भी उठाए गए हैं। समस्या के परिणामस्वरूप सामग्री अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। शिक्षकों को ऑनलाइन शैक्षिक सामग्री तैयार करनी चाहिए और उस पर टिप्पणी करनी चाहिए, छात्रों को विशेष रूप से कई कोणों से विषय का विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके अलावा, जबकि कुछ छात्र ऑनलाइन सीखने की सेटिंग में कामयाब होते हैं, अन्य विभिन्न कारकों के कारण संघर्ष करते हैं, जिसमें समर्थन की कमी भी शामिल है। उदाहरण के लिए, एक छात्र जो पहले आगे-पीछे की परिस्थितियों में पीड़ित रहा है, वह वर्तमान स्थिति में कहीं अधिक पीड़ित हो सकता है। ये लोग उन सेवाओं पर निर्भर हो सकते हैं जो अब सुलभ नहीं हैं। हालाँकि, ऑनलाइन शिक्षा प्रशिक्षकों के लिए कठिनाइयाँ प्रदान कर सकती है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ यह आदर्श नहीं रहा है ऑनलाइन शिक्षा प्रशिक्षकों के लिए कठिनाइयाँ प्रदान कर सकती है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ यह आदर्श नहीं रहा है। सीखने के संकट के कुछ कारण व्यापक रूप से ज्ञात हैं। एक महत्वपूर्ण कारक शिक्षण की खराब गुणवत्ता है। शिक्षकों में अक्सर विषय विशेषज्ञता की कमी होती है और उन्हें बहुत कम प्रशिक्षण मिला होता है। इसके लिए प्रौद्योगिकी समाधान हैं, और वे प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने और छात्रों को निर्देश देने दोनों में सहायक हो सकते हैं।

प्रौद्योगिकियाँ इन-सर्विस प्रशिक्षण या ऑनलाइन और व्यक्तिगत प्रशिक्षण का संयोजन प्रदान कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, इस बात के प्रमाण हैं कि प्रशिक्षकों को बेहतर प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। वे शिक्षा दे सकते हैं लेकिन ऐसा करने के लिए उनमें प्रेरणा की कमी होती है। भले ही शिक्षा हमेशा पारंपरिक कक्षा के बाहर विस्तारित हुई हो, लेकिन डिजिटल और दूरस्थ संदर्भों की बदलती परिस्थितियाँ और पैमाना महत्वपूर्ण अनुकूलन, तैयारी, समर्थन और जुड़ाव की मांग करता है। छात्रों के साथ सीमित या कोई संपर्क नहीं, जुड़ाव पर पुनर्विचार, पहुँच, शिक्षण दृष्टिकोण, विभिन्न विशिष्ट आवश्यकताओं को उचित रूप से संबोधित करना, छात्रों को प्रेरित करना, परस्पर विरोधी समय की माँगों को संभालना और विवश सेटिंग्स से निपटना ध्यानपूर्वक सीखने और पढ़ाने में योगदान दे सकता है। इस बात के भी सबूत हैं कि "उचित स्तर पर निर्देश" के लिए कम तकनीक वाले हस्तक्षेप सीखने को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं। क्योंकि कम तकनीक वाले समाधान कम खर्चीले हैं और गरीब देशों को वित्तपोषण सीमित करता है, इसलिए यह स्थापित करने के लिए सावधानीपूर्वक जांच की आवश्यकता है कि उच्च तकनीक या कम तकनीक वाले समाधान बेहतर हैं या नहीं। शिक्षक वीडियो के माध्यम से पढ़ा रहे हैं, लेकिन वे हमेशा बेहतर

तरीके से नहीं पढ़ा रहे हैं, जैसा कि वे कक्षा के सामने खड़े होकर पढ़ाते हैं। अधिक बड़े पैमाने पर खुले ऑनलाइन पाठ्यक्रम पेश किए जा रहे हैं और अपनाए जा रहे हैं, लेकिन उनमें से कई प्राथमिक शिक्षा के लिए नहीं हैं और सीखने के मुद्दे को संबोधित नहीं करते हैं। इसके लिए घर पर हार्डवेयर और कनेक्टिविटी की आवश्यकता होती है, जो कम आय वाले घरों में बच्चों के लिए दुर्गम है। गेमिफिकेशन और अन्य रणनीतियाँ युवाओं को पढ़ाई के लिए अधिक समय देने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं। अंत में, विचार करें कि शिक्षा प्रौद्योगिकियों का उपयोग किए बिना प्रभावी सीखने के परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं ऑनलाइन स्कूली शिक्षा के कारण कुछ छात्रों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। कुछ छात्र कम आय वाले परिवारों से आते हैं और उनके घरों में सेलफोन नहीं होते हैं; इसलिए, वे स्कूल में संघर्ष करते हैं। लाखों युवाओं के पास घर पर इंटरनेट की सुविधा नहीं है। 15 वर्ष से कम उम्र के छात्र इस जटिल तकनीक को जल्दी सीख लेते हैं, फिर भी वे खराब दृष्टि और पीठ दर्द से जूझते हैं। शिक्षकों को भी कठिनाई हो रही है क्योंकि कुछ डिजिटल तकनीकों के साथ बिल्कुल अनुभवहीन हैं। में संघर्ष करते हैं। लाखों युवाओं के पास घर पर इंटरनेट की सुविधा नहीं है। फिर भी वे खराब दृष्टि और पीठ दर्द से जूझते हैं। शिक्षकों को भी कठिनाई हो रही है क्योंकि कुछ डिजिटल तकनीकों के साथ बिल्कुल अनुभवहीन फर भी, वे अपने बच्चों को ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से शिक्षित करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। कॉलेज के छात्र जो सैद्धांतिक विषयों की तुलना में अधिक व्यावहारिक विषय लेते हैं, उन्हें भी इसी तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि ऑनलाइन कार्यक्रमों में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

जबकि प्रौद्योगिकी को धोखाधड़ी के लिए एक और रास्ता माना जा सकता है, असाइनमेंट और मूल्यांकन को इस तरह से डिज़ाइन करना संभव है कि ऐसी घटना की संभावना न हो। दूसरी ओर, ओपन-बुक परीक्षाओं का उपयोग समस्या समाधान और अवधारण पर महारत हासिल करने के लिए किया जा सकता है। छात्र की उपस्थिति और प्रदर्शन को ट्रैक करने जैसी समय लेने वाली प्रक्रियाओं को स्वचालन के साथ तेज किया जा सकता है। अपने वस्तुनिष्ठ स्वभाव के कारण, जुड़ाव उपकरण लेखन असाइनमेंट, बातचीत और भागीदारी के लिए ग्रेडिंग में तेजी लाने और सामान्य छात्र पूछताछ को संबोधित करने में सहायता कर सकते हैं। उचित सूचना और संचार प्रौद्योगिकी उपकरण, इंटरनेट / मोबाइल नेटवर्क कनेक्टिविटी, निर्देशात्मक संसाधन और शिक्षक प्रशिक्षण के बिना, छात्र दूरस्थ शिक्षा में भाग नहीं ले सकते हैं। संसाधन-विहीन स्थानों, अलग-थलग ग्रामीण क्षेत्रों और कम आय वाले परिवारों के छात्रों के पिछड़ने की संभावना अधिक होती है। विकलांग शिक्षार्थियों या जो घर पर अंग्रेजी के अलावा कोई अन्य भाषा बोलते हैं, उन्हें अतिरिक्त व्यक्तिगत सहायता की आवश्यकता है

उच्च शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन के 4 प्राथमिक लक्ष्य—

1—इससे पहले कि कोई भी संस्था सफल डिजिटल परिवर्तन रणनीति लागू कर सके, उन्हें ठोस लक्ष्यों की आवश्यकता होती है।

2—किसी भी तरह से व्यवसाय में बदलाव लाने के लिए ईमानदारी से प्रयास करने की आवश्यकता होती है, और बिना ठोस लक्ष्य के आप यह निश्चित रूप से नहीं जान पाएंगे कि आपकी कड़ी मेहनत सार्थक थी या नहीं।

3—प्रत्येक कॉलेज और विश्वविद्यालय का एक अलग क्षेत्र होगा जिस पर वे पहले ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, लेकिन उच्च शिक्षा के लिए डिजिटल परिवर्तन के कुछ प्राथमिक लक्ष्य इस प्रकार हैं:

4—छात्र अनुभव को बेहतर बनाना: यह छात्र मीट्रिक्स जैसे प्रतिधारण और स्नातक दर, पाठ्यक्रम सफलता दर और अन्य मार्करों को बेहतर बनाने पर केंद्रित है जो समग्र सफलता को साबित करते हैं। प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार: यह लक्ष्य डिजिटल माध्यमों का उपयोग करके किसी संस्थान को प्रतिस्पर्धा से अलग करने पर केंद्रित है।

किसी भी तरह से व्यवसाय में बदलाव लाने के लिए ईमानदारी से प्रयास करने की आवश्यकता होती है, और बिना ठोस लक्ष्य के आप यह निश्चित रूप से नहीं जान पाएंगे कि आपकी कड़ी मेहनत सार्थक थी या नहीं। प्रत्येक कॉलेज और विश्वविद्यालय का एक अलग क्षेत्र होगा जिस पर वे पहले ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, लेकिन उच्च शिक्षा के लिए डिजिटल परिवर्तन के कुछ प्राथमिक लक्ष्य इस प्रकार हैं:

6—छात्र अनुभव को बेहतर बनाना:— जैसे प्रतिधारण और स्नातक दर, पाठ्यक्रम सफलता दर और अन्य मार्करों को बेहतर बनाने पर केंद्रित है जो समग्र सफलता को साबित करते हैं।

7—प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार:— यह लक्ष्य डिजिटल माध्यमों का उपयोग करके किसी संस्थान को प्रतिस्पर्धा से अलग करने पर केंद्रित है।

8—डेटा—संचालित निर्णय लेने की संस्कृति का निर्माण करना:— इसमें छात्रों, संकाय, नेतृत्व और अन्य स्टाफ सदस्यों के लिए परिसर के सभी क्षेत्रों में डिजिटल मानसिकता को अपनाना शामिल है। संसाधनों का अनुकूलन: इसमें प्रशासकों के बीच संचार में सुधार से लेकर बिजली के उपयोग से संबंधित लागत में कटौती तक सब कुछ शामिल है।

9—शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता:— शिक्षा के वैश्वीकरण ने पहले ही डिजिटल तकनीकों के अनुप्रयोग को आवश्यक बना दिया है। कक्षाएं संचालित करने, संसाधनों को साझा करने, मूल्यांकन करने और शैक्षणिक संस्थानों की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों के प्रबंधन के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म उपलब्ध थे। हालाँकि, इन प्लेटफॉर्म का उपयोग सक्रिय था। डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ अन्य क्षेत्रों के साथ शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण रूप से उभरी हैं।

आईसीटी के सफल एकीकरण को सुनिश्चित करने के लिए ऑनलाइन शिक्षण के लिए संकाय की तैयारी और प्रशिक्षण को आवश्यक घटकों के रूप में पहचाना गया। प्रभावी डिजिटल शिक्षण के लिए आवश्यक कौशल और आत्मविश्वास से लैस करने के लिए प्राथमिकता दी जानी चाहिए। सुलभ, न्यायसंगत और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने की प्रतिबद्धता भविष्य के प्रयासों में सबसे आगे रहनी चाहिए।

निष्कर्ष:— जबकि हमारा ढांचा सात अलग-अलग क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है, डिजिटल लर्निंग के लिए डीएक्स प्राप्त करना एक पुनरावृत्त प्रक्रिया है। जैसे-जैसे उन्नत डिजिटल तकनीकें विकसित होती हैं, उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए डीएक्स पहल आम हो जाएगी। डिजिटल लर्निंग के लिए डीएक्स छात्रों के लिए लचीलापन और सुलभता लाता है और उन्हें डिजिटल दुनिया में समस्याओं को हल करने के लिए तैयार

करता है। डीएक्स प्रयास उच्च शिक्षा के भीतर मानदंडों और प्रथाओं को आकार देना जारी रखेंगे ताकि यह समाज के समानांतर अनुकूलित और विकसित हो सके।

संदर्भ सूची—

- (1) जे. कींगवे, एम. भार्गव मोबाइल शिक्षण और शिक्षा में मोबाइल प्रौद्योगिकियों का एकीकरण शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी, 19 (4) (2014), पृ. 737 – 746
- (2) एस. ड्रेइमेन, आर. उपेनिक्स चिकित्सा शिक्षा के लिए गंभीर खेलों और सीखने की प्रेरणा का अंतर्संबंध: एक साहित्य समीक्षा
गेमिफिकेशन और गेम-आधारित शिक्षा में विकास पर
शोध संकलन (2022), पृ. 1938 – 1947
- (3) पीएल रोजर्स शिक्षा में उभरती प्रौद्योगिकियों को अपनाने में बाधाएं
जर्नल ऑफ एजुकेशनल कंप्यूटिंग रिसर्च, 22 (4) (2000), पृ. 455–472
- (4) हदाद, डब्ल्यू.डी., और ड्रैक्सलर, ए. (2002). शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकियों की गतिशील
- (5) एस. कोसारेत्स्की, एस. ज़ैर-बेक, वाई. केशा, आर. ज़िवागिन्त्सेव कोविड-19 के दौरान रूस में सामान्य शिक्षा: तैयारी, नीतिगत प्रतिक्रिया और सीखे गए सबक
- (6) बीई पेनप्रेज चौथी औद्योगिक क्रांति और उच्च शिक्षा चौथी औद्योगिक क्रांति के युग में उच्च शिक्षा, 10 (2018) , पृ. 978 – 981
- (7) क्रुकोव, वी., और गोरिन, ए. (2017)। विश्वविद्यालयों में शिक्षा नवाचार के रूप में डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ। ऑस्ट्रेलियाई शैक्षिक कंप्यूटिंग, 32 (1), 1–161
- (8) ओ. लोपेज़-फर्नांडीज़ इंटरनेट प्रौद्योगिकी और व्यसन संबंधी समस्याओं से संबंधित उभरते स्वास्थ्य और शिक्षा मुद्दे इंट. जे. एनवायरन. रेस. पब्लिक हेल्थ, 18 (1) (2021), पृ. 321